SEM-1, SC-102
S.B. Choudhy Page-2

(5) **संस्कृति का हस्तान्तरण**—शिक्षा भावी पीढ़ी को संस्कृति का हस्तान्तरण करके समाज में स्थायित्व एवं निरन्तरता लाती है। यही नहीं, शिक्षा समाज को नाना प्रकार के सुधारों तथा परिवर्तनों के लिए भी प्रेरित करती है। इस दृष्टि से शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की जन्मदाता, प्रवर्तक तथा निर्देशक है एवं अविनाशी शक्ति (Conservative Force) के साथ-साथ रचनात्मक शक्ति (Creative Force) भी है।

(6) **एकता तथा समग्रता उत्पन्न करना**—जब समाज के विभिन्न वर्गों में अनेक मतभेद के कारण संघर्ष होने लगता है तो शिक्षा लोगों में ऐसे विचारों को प्रसारित करती है जिनसे एकता तथा समग्रता उत्पन्न हो जाती है। हमारे देश में जातीयता, प्रान्तीयता तथा भाषा आदि के कारण लोगों में आये दिन घोर संघर्ष रहता है। शिक्षा इस ओर ध्यान देकर राष्ट्रीय एकता स्थापित करे।

(7) **मानवीय तथा सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखना**—तकनीकी प्रभावों के कारण औद्योगिक समाज में शिथिलता आने लगती है। परिणामस्वरूप मानवीय गुण समाप्त हो जाते हैं और सामाजिक सम्बन्ध भी छिन्न-भिन्न होने लगते हैं। शिक्षा का यह महत्त्वपूर्ण कार्य है कि वह औद्योगीकरण द्वारा आये हुए सामाजिक परिवर्तनों में मानवीय तथा सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखने में सहायता प्रदान करती है।

(8) **सामाजिक परिवर्तनों की शिक्षा**—शिक्षा लोगों को सामाजिक परिवर्तन का ज्ञान देने के लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग करती है। जब लोगों को सामाजिक परिवर्तनों का ज्ञान हो जाता है तो वे सामाजिक परिवर्तन प्रत्येक योजना में सक्रिय रूप से भाग लेने लगते हैं।

(9) **परिवर्तन में बाधा दूर करना**—सामाजिक परिवर्तन के लाने में अनेक बाधायें आती हैं। शिक्षा परिवर्तन के महत्त्व को स्पष्ट करके बाधाओं को दूर करती है।

(10) **ज्ञान के क्षेत्रों में विकास करना**—शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विकास करना सिखाती है अर्थात् शिक्षा के द्वारा व्यक्ति नये-नये अनुसंधान करता है जिससे संस्कृति के भौतिक तथा अभौतिक दोनों तत्त्वों में परिवर्तन होता रहता है। संक्षेप में, शिक्षा ज्ञान को विकसित करके सामाजिक परिवर्तन लाने में सहयोग प्रदान करती है।

(11) **सामाजिक परिवर्तन का नेतृत्व**—शिक्षा जनतन्त्रीय भावनाओं को विकसित करके व्यक्ति के अन्दर ऐसी शक्तियों का विकास करती है जिनके आधार पर वह सामाजिक कुरीतियों में आवश्यक परिवर्तन लाकर एक उत्तम जीवन व्यतीत करने लगता है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा व्यक्ति को वांछनीय सामाजिक परिवर्तन का नेतृत्व करना सिखाती है। जब शिक्षा इस कार्य को पूरा नहीं करती तो सामाजिक कार्यकर्त्ताओं तथा नेताओं का निर्माण नहीं होता। परिणामस्वरूप सामाजिक विकास रुक जाता है।